प्रश्न – बॉक्सर आन्दोलन क्यों हुआ। इसका क्या महत्व था

उत्तर :– बॉक्सर विद्रोह चीन के इतिहास की एक युगान्तकारी घटना मानी जाती है। इस विद्रोह के प्रणेता वहाँ के किसान एवं राष्ट्रवादी नेता था। यह पहला विद्रोह था जो चीन मे बढ़ते हुए विदेशी प्रभाव के विरुद्ध हुआ। चीनी नागरिक शुरू से स्वाभिमानी थे। इस लिए वे विद्रोही थे। वे हमेशा राष्ट्राभिमान की सुरक्षा के लिए तत्पर रहते थे। ताइपिंग विद्रोह के बाद चीन मे दूसरा बॉक्सर विद्रोह हुआ जो चीन के परम्परा विद्रोह की कड़ियो मे एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप मे जुड़ गया।

चीन के लोगो ने एक समिति का संगठन किया और यह चीन के उत्तरी पूर्वी क्षेत्र में किया गया। जहाँ विदेशियो के प्रति लोगो मे काफी असंतोष था। चीन के देश भक्तो ने गुप्त संस्थाओ की स्थापना की। जिसमे आओ हुई, ती आओ हुई और इहो चुआन आदि मुख्य थे। इहो चुआन मुक्के बाजो की संस्था थी जो विदेशियों का नाश और मांचू सरकार की रक्षा करना अपना लक्ष्य बनाया था। स्वभाविक रूप से मंचू शासक एवं उच्चाधिकारियों का समर्थन इसे प्राप्त था। (ताओ वादीयो एवं बौद्धो ने भी उन्हे समर्थन दी थी।) विद्रोहियो का निशाना विदेशी थे। 1899 ई० मे शांसी, चली एवं दक्षिण मन्चूरिया मे इसाई पादरियो को आक्रमण का शिकार बनाया गया। विदेशी ठिकेदारो एवं इंजीनियरों को मौत के घाट उतार दिया गया। पेकिंग और तिनित्सीन के बीच रेल पटरियो को उखाड़ दिया गया। (विदेशीउग्र हो गये क्योंकि मंचू सरकार का समर्थन इन्हे प्राप्त था।) इसमे कई सौ विदेशियो को मार डाला गया। बॉक्सर विद्रोह को देख यूरोपिय राष्ट्रो को एक साथ मिलकर विद्रोह का सामना करने के लिए बाध्य किया। ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, रूस और जापान की सम्मलित सेना तिनित्सीन पर आक्रमण किया इस युद्ध मे लगभग 15,000 चीनी मारे गये और मित्र पक्ष के लगभग 800 सैनिक हताहत

हुए। संयुक्त सेना पेकिंग की किलेबंदी तोड़कर वहाँ राजदूतों को मुक्त कराया। प्रतिशोध में यूरोपियन सैनिकों ने आतंक का राज्य कायम किया। चीन की राजमाता राजधानी छोड़कर सियान भाग गयी। यही विद्रोह बाक्सर विद्रोह के नाम से चीनी इतिहास में चर्चित है बाक्सर का अर्थ मुट्ठी था। जिसमें काफी शक्ति होती है इसलिए इस दल के समर्थक अपने को बॉक्सर कहने लगे और अपनी शक्ति पर भरोसा कर विद्रोह कर दिये। इन्हें मुक्केबाजी भी कहा जा सकता है गुप्त समितियाँ या दल बॉक्सर कहलाता था। जिसका नारा था "देश की रक्षा करो विद्रोहियों को नष्ट करो।"

विदेशियों द्वारा चीन का शोषण जनता की नजर में खटकने लगा। जबकि वहाँ की सरकार शोषण का विरोध करने की स्थिति में नहीं थे। विदेशी शक्तियों द्वारा लूट का बाजार चरम सीमा पर था। ऐसी स्थिति में शोषण से मुक्ति पाने तथा विदेशी ताकतों को निष्कासित करने के लिए क्रांतिकारी संगठनों की स्थापना चीन में की गई। बॉक्सर विद्रोह के निम्न कारण थे।

(1) चीन में गणतंत्रीय राज्य शासन प्रणाली की स्थापना :-> विद्रोहियों का लक्ष्य था। उस समय चीन में दो राजनीतिक दल थे। एक का नेता डॉ० सनयात सेन थे जो गणतंत्रीय विचारों से प्रभावित थे। दूसरा दल सुधार वादियों का था जो चीन में शक्तिशाली एवं वैधानिक राजतंत्र को कायम रखना चाहते थे।

(2) विदेशी लूट-खसोट :-> अफीम युद्ध के बाद चीन में कई विदेशी ताकतों ने अपना पैर स्थापित करा लिया था। जिनमें England, France, America, Russ, Japan आदि थे। इन विदेशी शक्तियों द्वारा चीन को एक खरबूज की भाँति बाँटकर वहाँ की सम्पदा को (खरबूज) हस्तगत करने के प्रयत्न शुरू कर दिये गये थे। वहाँ की बेशुमार सम्पत्ति पर विदेशियों का प्रभाव स्थापित हो गया था। ये विदेशी शक्तियाँ चीन में लूट मचाये हुई थी। इन लोलुप निगाहों के प्रति

जन साधारण का आक्रोश दिन प्रति दिन बढ़ता जा रहा था वहाँ की जनता की राजनीतिक चेतना जागृत हो चुकी थी। ऐसी स्थिति में बाक्सर विद्रोह के सिवा कोई दूसरा विकल्प वहाँ के निवासियों के समक्ष नहीं बचा।

(3) ईसाई (मिशनरियों) के प्रति क्षोभ :-> विदेशी शक्तियों के प्रमुख न सिर्फ राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्र के दोहन पर प्रभाव छोड़ा, बल्कि वहाँ का धार्मिक क्षेत्र भी विशेष प्रभावित हुआ। जिस समय बाक्सर विद्रोह हुआ उस समय तक ईसाई पादरियों द्वारा चीन में धर्म प्रचार का काम जोरों से चलाया जा रहा था। ये ईसाई धर्म प्रचारक प्रलोभन देकर चीनियों को ईसाई धर्म के प्रति आकर्षित कर रहे थे। वे चीन के प्राचीन धार्मिक व्यवस्था की आलोचना करके ईसाई धर्म को चीन में प्रतिष्ठित करना चाहते थे। इस लिए ईसाई धर्म प्रचार से चीन का सामाजिक और धार्मिक ढांचा चरमराने लगा (डगमगाने) चीन में ईसाइयों के प्रति बहुत तरह की अफवाहें फैल चुकी थी। अतः ईसाईयों के प्रति जन साधारण में सामान्यतः असंतोष चीनी विद्रोह का कारण बन गया।

(4) चीन में विदेशी पूंजीशक्तियों के विद्रोह आक्रोश :-> विदेशी पूंजी-पति वर्ग चीन के प्रति उपेक्षा की भावना से काम कर रहे थे। रेलवे निर्माण, डाकतार की व्यवस्था एवं खानों की खुदाई आदि कामों में ठेकेदारी व्यवस्था को प्रोत्साहन मिल रहा था। इस व्यवस्था में चीनी जनता पूंजी पतियों द्वारा फैलाये गये जाल में उलझ गई थी क्योंकि पूंजी पति वर्ग आर्थिक एवं आर्थिक लाभ करना चाहते थे।

(5) अफीम का व्यापार उनके लिए सोने की चिड़िया की तरह था। विदेशी बैंकों और साझेदारी कम्पनी के द्वारा भी चीनी जनता का आर्थिक शोषण किया जा रहा था। पूंजीपतियों के प्रति चीन में विद्रोह का मुख्य बॉक्सर विद्रोह का कारण था।

चीन की अव्यवस्था :-

(6) चीन की अर्थव्यवस्था शोचनीय थी। पश्चिमी राष्ट्रों को आर्थिक सुविधा और रियायतें देने के कारण चीन आर्थिक दिवालियापन की स्थिति में आ गई थी। मंचू सरकार न तो शोषण रोक पाई थी और न ही पश्चिम के बढ़ते प्रभाव पर अंकुश लगा सकती थी। फलत: मंचू सरकार के प्रतिपक्षियों का मनोबल बढ़ा और विदेशियों को बाहर निकालने में सरकार को खत्म करने के लिए तैयार हो गये।

(7) विद्रोह का तात्कालीन कारण - चीन में बाढ़ एवं अकाल था। चीन के कई प्रांतों में भीषण अकाल पड़ा, साथ ही चालु नदी के किनारे अनेक गाँव बाढ़ की चपेट में नष्ट हो गये। इसके अतिरिक्त चीन में टिड्डियों के द्वारा फसल नष्ट कर दिया गया था। इससे भीषण अन्न संकट उत्पन्न हो गया।

उपर्युक्त तथ्यों के अतिरिक्त इस बात की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता है कि पश्चात्य देशों के सम्पर्क में आने के उपरांत चीन वासियों में राष्ट्रीयता की भावना जोड़ पकड़ने लगी। सन्यात सेन आदि जैसे व्यक्तियों ने पश्चिमी देशों का दौरा किया जिसके कारण देश की तत्कालीन स्थिति को समझने के लिए तैयार हो गये।

वस्तुत: वहाँ की सरकार अकाल और बाढ़ से पीड़ित जनता को सुरक्षा प्रदान नहीं कर सकी। प्राकृतिक प्रकोप जनाक्रोश में बदल गया। बाक्सर विद्रोह हुआ परंतु यह विद्रोह असफल हो गया। वस्तुत: रास्तों की अंधकार में चीन वासी पीछे रह गये।

परिणाम :—

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से बाक्सर विद्रोह के परिणाम चीन के लिए अत्यंत हानिकारक सिद्ध हुए। इस विद्रोह के दमनोपरांत 1901 ई० में पश्चिमी देश ने चीन के साथ एक संधि की जिसे बाक्सर प्रोटोकल कहा जाता है। यह एक अपमान जनक संधि थी। जिसकी सभी धाराएं स्वतंत्र चीन फिर भी निर्बल सरकार के सामने स्वीकार करने के सिवा कोई दूसरा

विकल्प नहीं था। इस सन्धि के अनुसार :—

(1) विदेशियों के साथ अभद्र व्यवहार करने वाले को दंड दिया जाना तय हुआ।

(2) विदेशी दूतावासों की सुरक्षा तथा उसमें चीनियों का प्रवेश निषेध कर दिया जाय।

(3) दूतावासों में सम्बद्ध देशों को अपनी सुरक्षा के लिए अपनी सेना रखने की आज्ञा दी गई।

(4) जापानी राजदूत की हत्या के लिए तथा हर्जाने के रूप में डेढ़ करोड़ रुपया वसूल किया गया।

(5) पेकिंग में जर्मनी राजदूत की हत्या के लिए चीन की सरकार को क्षमा मांगने तथा एक स्मारक का निर्माण करना निर्धारित हुआ।

(6) लिनिस्तान को चीन की सरकार खाली कर दे और इसे विदेशियों के कब्जे में कर दिया जाय।

(7) विदेशी राज्य के साथ चीन से जितनी भी संधियाँ की हैं उनमें परिवर्तन लाकर उनका संशोधन किया जाय।

(8) दो वर्षों तक चीन के विदेशी शस्त्र प्राप्त नहीं होगा।

वस्तुत: यह संधि चीन के लिए अपमान जनक थी। इस संधि से चीन की कमजोरी स्पष्ट होकर सामने आ गई। इस संधि ने चीन को विदेशियों के हाथों में डाल दिया। वस्तुत: बाक्सर विद्रोह विदेशी शक्तियों के सामने असफल रहा। सम्मलित युरोपिय शक्तियों का मुकाबला वे नहीं कर सके। चीन की जनता का हार्दिक सहयोग तत्काल विद्रोहियों को नहीं मिला। इसलिए विद्रोह को दबाने में विदेशियों को आवश्यक कठिनाई नहीं हुई फिर भी विद्रोह का परिणाम चीन के लिए घातक ही हुआ। विद्रोह के बाद युरोपिय सैनिकों को वापस नहीं भेजा गया एवं सुरक्षा के नामपर सैनिकों का जाल चीन में बिछा दिया गया। कमजोर मंचू सरकार को विदेशियों ने जीवित रखकर पुन: साम्राज्य विस्तार में जुट गये। चीन में सम्राट की शक्ति नाम मात्र की रह गई। मंचू सरकार का अभिभावक विदेशी बन गये। उनके निर्देश पर

सरकार का अभिभावक विदेशी बन गये। उनके निर्देश पर सरकार चलने लगी। उन्मुक्त द्वार की नीति अपनाने के बाद विदेशियों का साम्राज्यवादी विस्तार में कोई बाधा नहीं रही। विदेशियों द्वारा खुलकर चीन का आर्थिक शोषण होने लगा। चीन की राजनीतिक सम्प्रभुता दिखावे के लिए रह गई। उसका पतन अवश्यम्भावी दिखने लगा।

विद्रोह के बाद चीन में सुधार की मांग की जाने लगी। चीन को जापान जैसा आधुनिक राज्य बनाने का प्रयास हुआ। सुधार की मांग के कारण चीन में गणतंत्र की स्थापना हुआ। चीन मरा नहीं था। उसमें उसमें जान थी। और राष्ट्रवादी प्रवृत्ति अवसर पाकर चीन की राजनीति को प्रभावित करके प्रगति के पथ पर ला दिया।